

डॉ. डेविड एल. मैथ्यूसन, न्यू टेस्टामेंट थियोलॉजी, सत्र 10, वाचा, पुराना नियम और नया नियम, भाग 2

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेव मैथ्यूसन द्वारा न्यू टेस्टामेंट थियोलॉजी पर व्याख्यान श्रृंखला में दिया गया है। यह सत्र 10 है, वाचा, पुराना नियम और नया नियम, भाग 2।

हमने पिछले भाग को यीशु द्वारा अब्राहमिक वाचा को पूरा करने और विशेष रूप से पॉल को देखते हुए समाप्त किया, हालाँकि, उदाहरण के लिए, मैथ्यू दर्शाता है कि यीशु अब्राहम के सच्चे पुत्र के रूप में अब्राहम से किए गए वादों को पूरा करने के लिए आ रहे हैं जो सभी राष्ट्रों को अब्राहमिक वाचा का आशीर्वाद लाते हैं।

इसी तरह और अधिक स्पष्ट रूप से पौलुस ने अब्राहम के वंश या अब्राहम की संतान से संबंधित उत्पत्ति में दिए गए वादों की पूर्ति में अब्राहम के सच्चे वंश के रूप में यीशु का उल्लेख किया है। और इसलिए, गलातियों 3:16 में, हम यह नोट करके समाप्त करते हैं कि पौलुस ने यीशु को अब्राहम के वंश के बराबर बताया है। यीशु अब्राहमिक वाचा की पूर्ति है, इसलिए अब्राहमिक वाचा की आशीर्षे अब मसीह के व्यक्तित्व के माध्यम से सभी राष्ट्रों में जाती हैं और प्रवाहित होती हैं।

हालाँकि, अब्राहमिक वाचा का दूसरा तत्व यह है कि अब्राहमिक वाचा के वादे न केवल यीशु में बल्कि उसके अनुयायियों में भी पूरे होते हैं। इसलिए, एक बार फिर, जैसा कि मैंने कहा, हम इनमें से अधिकांश विषयों के साथ ऐसा देखते हैं। वादे, सबसे पहले, यीशु के माध्यम से होते हैं और फिर उसके लोगों तक विस्तारित होते हैं जो विश्वास में उसके साथ एकजुट होते हैं।

और यही बात यहाँ गलातियों 3:16 में घटित होती है, जिस पर हम पहले ही संक्षेप में बात कर चुके हैं। इसलिए, अध्याय 3:16 को पढ़ने के बाद, हालाँकि हम गलातियों के अध्याय 3:7 में पहले ही देख चुके हैं कि गलातिया में पौलुस के पाठकों को अब्राहम की संतान कहा जाता है, अध्याय 3 के बिल्कुल अंत में, हम पाते हैं कि गलातियों के अध्याय 3:29 में पौलुस कहता है, यदि तुम मसीह के हो तो तुम अब्राहम के वंश और वादे के अनुसार वारिस हो। अर्थात्, वे अब्राहम से किए गए वादों को विरासत में पाते हैं, जिसमें, एक तरह से साइड नोट के रूप में, मैं भूमि के वादों को भी शामिल करता हूँ, जिसके बारे में हम पहले ही भूमि और सृष्टि के बारे में बात कर चुके हैं, संभवतः कैसे परमेश्वर के लोगों के पास भूमि के वादे हैं।

लेकिन लेखक यह कैसे कह सकता है कि आप अब्राहम के वंशज हैं? ऐसा इसलिए है क्योंकि, जैसा कि श्लोक 29 की शुरुआत में बताया गया है, आप मसीह के हैं, जिसे, अध्याय 3:16 में, पौलुस ने पहले ही अब्राहम के वंशज कहा है। इसलिए यीशु अब्राहम के सच्चे वंशज हैं, लेकिन हम भी मसीह के वंशज होने के कारण अब्राहम के वंशज हैं, जो अब्राहम के वंशज हैं। इसलिए,

फिर से, पौलुस कह सकता है, यदि आप मसीह के हैं, और वह अब्राहम के सच्चे वंशज को मान रहा है, अध्याय 3:16, यदि आप उसके हैं, तो आप भी अब्राहम के वंशज हैं और वादे के अनुसार वारिस हैं।

एक और दिलचस्प पाठ जिसे हम आमतौर पर अब्राहमिक वाचा से नहीं जोड़ते हैं, जो शायद अब हमें अभी तक नहीं की ओर ले जाता है, लेकिन मैं इसके बारे में बात करना चाहता हूँ, यह रहस्योद्घाटन अध्याय 7 और पद 9 में पाया जाता है, जो संभवतः यूहन्ना के पूर्णता के दर्शन का हिस्सा है। तो अब हम अभी तक नहीं की ओर बढ़ गए हैं, लेकिन मैं इसका उल्लेख करना चाहता हूँ क्योंकि यह दूसरा पाठ है जो, मेरे लिए, स्पष्ट रूप से अब्राहमिक वाचा की पूर्ति या अब्राहम की संतान की पूर्ति के संदर्भ में परमेश्वर के लोगों को संदर्भित करता है। इसके बाद, प्रकाशितवाक्य 7 के पद 9 में, यानी पहले आठ पदों में, यूहन्ना इस्राएल राष्ट्र के प्रत्येक गोत्र से 144,000 लोगों की संख्या देखता है।

हम उस पाठ को बाद में समझेंगे जब हम परमेश्वर के लोगों के बारे में बात करेंगे। लेकिन अब यूहन्ना कहता है कि इसके बाद, 144,000 को मुहरबंद देखने के बाद, मैंने देखा और मेरे सामने एक बड़ी भीड़ थी जिसे कोई गिन नहीं सकता था या गिन नहीं सकता था, हर राष्ट्र, जनजाति, लोगों और भाषाओं से सिंहासन और मेमने के सामने खड़े थे। वे सफेद वस्त्र पहने हुए थे और अपने हाथों में खजूर की डालियाँ पकड़े हुए थे।

मैं जिस बात पर ध्यान केंद्रित करना चाहता हूँ, वह है इस विशाल भीड़ का वर्णन, जो एक ऐसे समूह से संबंधित है जिसे कोई गिन नहीं सकता, या कोई भी गिन नहीं सकता। मेरे विचार से, और कुछ अन्य टिप्पणियों ने, मुझे लगता है, इसे पृष्ठ किया है, लेकिन मेरे विचार से, एक भीड़ की यह भाषा जिसे कोई भी गिन नहीं सकता, संभवतः अब्राहमिक वादे को फिर से दर्शाती है। जबकि अगर आपको याद हो, अगर आप उत्पत्ति 15-17 पर वापस जाते हैं, तो परमेश्वर लगातार इस्राएल से किए गए वादे को दोहराता है, और मेरा मानना है कि उसके बाद के कुछ कुलपिताओं ने भी अब्राहम से किए गए वादों को दोहराते हुए, परमेश्वर ने अब्राहम से वादा किया कि उसकी संतान इतनी अधिक होगी कि वह आकाश के तारों और समुद्र की रेत से भी अधिक होगी।

यह इतनी अधिक संख्या में होगी कि इसे गिना नहीं जा सकेगा। और इसलिए, यह एक ऐसी भीड़ का संदर्भ है जिसे कोई भी गिन नहीं सकता या कोई भी गिन नहीं सकता, मुझे लगता है, यह उत्पत्ति की पुस्तक में अब्राहम से किए गए वादों की ओर इशारा करता है। ताकि एक बार फिर, परमेश्वर के लोग अब्राहम से किए गए वादों को पूरा करें।

दिलचस्प बात यह है कि जब आप उत्पत्ति 12 में अब्राहम से किए गए मूल वादे पर वापस जाते हैं, तो परमेश्वर वादा करता है कि वह अब्राहम का नाम महान बनाएगा, वह उसे एक शक्तिशाली राष्ट्र बनाएगा, और वह अंततः पृथ्वी के सभी राष्ट्रों के लिए एक आशीर्वाद होगा। लेकिन यह दिलचस्प है कि जब आप नए नियम, गलातियों 3, और यहाँ प्रकाशितवाक्य 9 में पहुँचते हैं, तो यह सभी राष्ट्रों के लिए आशीर्वाद नहीं है, बल्कि यह अब्राहम की संतान है जिसे अपील की जाती है। असंख्य संतानें।

ताकि हम अब्राहम की आशीषों में भाग लें, न केवल उन राष्ट्रों के रूप में जो धन्य हैं, बल्कि हम वे राष्ट्र हैं जो अब्राहम की संतान बनकर, अब्राहम के वंश बनकर, उस असंख्य भीड़ बनकर, उस भीड़ बनकर धन्य हैं, जिसे अब्राहम के वादों की पूर्ति में गिना नहीं जा सकता। इसलिए मुझे यह काफी दिलचस्प लगता है कि हम न केवल अब्राहम के वादे पाने के लिए उनके पीछे पड़े हैं, हालाँकि यह जरूरी नहीं है कि उत्पत्ति 12 का इरादा यही हो, बल्कि इसके बजाय, हम राष्ट्रों के रूप में, अब्राहम के वंश बनकर आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। गलातियों 3 और प्रकाशितवाक्य अध्याय 7। इसलिए, हमने वादों, सृष्टि के समय परमेश्वर के अपने लोगों, आदम और हव्वा के साथ संबंधों को देखा है, और यह कैसे मसीह और उसके लोगों में बहाल होता है।

हमने अब्राहम की वाचा को देखा है और यह भी कि यह मसीह के व्यक्तित्व और उसके लोगों में कैसे पूरी होती है। और अब, मैं दाऊद की वाचा को देखने में कुछ मिनट बिताना चाहता हूँ। परमेश्वर ने दाऊद के साथ जो वाचा बाँधी थी, वह यह थी कि वह दाऊद के वंश, दाऊद के वंशज को स्थापित करेगा, अपना सिंहासन स्थापित करेगा, अपना राज्य स्थापित करेगा, और हमेशा के लिए शासन करेगा।

इसी तरह हम पाते हैं कि नया नियम एकमत है, कि यीशु मसीह दाऊद का पुत्र है, दाऊद का वंश है, दाऊद का वंशज है जिसका वादा पुराने नियम में किया गया था। हमने 2 शमूएल 7 से इसकी शुरुआत देखी, जिसे कुछ भजनों, भजन 2, भजन 110 और भजन 89 में दोहराया गया है, लेकिन यह पुनर्स्थापना की भविष्यवाणियों की अपेक्षाओं में भी परिलक्षित होता है। यहजेकेल, अध्याय 36 और 37, यहाँ तक कि यशायाह की पुस्तक में भी, एक दाऊदी आकृति, शाखा, जेसी से एक गोली का संदर्भ दिया गया है जो ऊपर उठेगी।

आने वाले दाऊद वंश के शासक और दाऊद वंश के राजा की ये सारी उम्मीदें, जब परमेश्वर अपने लोगों को पुनर्स्थापित करता है, अब यीशु मसीह के व्यक्तित्व में पूरी होती हैं। परमेश्वर द्वारा दाऊद के साथ व्यवहार करने और दाऊद से किए गए वादों की लंबी कहानी अब यीशु मसीह के संदर्भ में चरम पर पहुँच रही है। हम पहले ही मत्ती अध्याय 1 और पद 1 का उल्लेख कर चुके हैं, जहाँ यीशु मसीह दाऊद का पुत्र और अब्राहम का पुत्र है।

लेकिन हम इब्रानियों के अध्याय 1 और पद 5 जैसे ग्रंथों में भी पाते हैं, जिसे मैं पहले ही पढ़ चुका हूँ, क्योंकि परमेश्वर ने कभी किस स्वर्गदूत से कहा, तू मेरा पुत्र है, आज मैं तेरा पिता बन गया हूँ, भजन अध्याय 2 और पद 7 से उद्धरण। लेकिन फिर, अगर यह पर्याप्त नहीं है, तो लेखक कहता है, या फिर, और अब वह 2 शमूएल 7, 14 पर वापस जाता है। फिर से, मैं उसका पिता बनूँगा, और वह मेरा पुत्र होगा, इस विशिष्ट दाऊदी वाचा सूत्र का उपयोग करते हुए। अब, इब्रानियों के लेखक ने पाया कि यह यीशु मसीह के व्यक्तित्व में पूरा हुआ है।

आप पाएंगे कि ये वही पाठ अन्यत्र यीशु मसीह पर भी लागू होते हैं। अन्य पाठ जिन्हें हमने देखा है, जो दाऊद की वाचा के सूत्र को लेते हैं और इसे मसीह के लिए संदर्भित करते हैं, उदाहरण के लिए, इफिसियों अध्याय 1 में, जहाँ यीशु मसीह को ऊँचा किया गया है और अपने शत्रुओं से ऊपर, अपने शत्रुओं से बहुत ऊपर, परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठाया गया है। यह भाषा भजन 110 से निकलती है, जो एक और दाऊद का भजन है।

इसलिए, मैं प्रेरितों के काम की पुस्तक में दिए गए पाठों की ओर इशारा कर सकता हूँ, और मैं कई अन्य पाठों की ओर इशारा कर सकता हूँ। कुछ नए नियम के विद्वान तो यहाँ तक सोचते हैं कि जहाँ भी आपको नए नियम में मसीह शब्द मिलता है, उसे मसीहा के संदर्भ में पढ़ा जाना चाहिए। यह सिर्फ़ एक उचित नाम या पदनाम नहीं है।

वे अभी भी इसे एक उपाधि के रूप में मानते हैं। हो सकता है कि यह सभी में सच न हो, लेकिन मुझे संदेह है कि, कम से कम उनमें से कुछ में, जब आप यीशु मसीह के संदर्भ पाते हैं, तो यीशु मसीह हैं, जो शायद अभी भी मसीहाई अर्थ रखता है। इसलिए, हम सभी जगह पाते हैं कि यीशु, धारणा और स्पष्ट संकेत कि यीशु दाऊद का पुत्र है और वह दाऊद से किए गए वादों को पूरा करता है।

लेकिन दिलचस्प बात यह है कि अक्सर जिस बात को अनदेखा कर दिया जाता है, वह है वादा, आदम के वादे और आदम के लिए परमेश्वर का इरादा और आदम को दिया गया आदेश, अब्राहम के वादे की तरह, दाऊद से किए गए वादे कि परमेश्वर उसका पिता है और दाऊद उसका पुत्र है, यह भी उसके लोगों पर लागू होता है। उदाहरण के लिए, 2 कुरिन्थियों अध्याय 6 और श्लोक 18 में, एक पाठ जिसे हम पहले ही कई बार देख चुके हैं, वह भूमि और मंदिरों से जुड़ा हुआ है। 2 कुरिन्थियों अध्याय 6 में, मैं श्लोक 18 को पुराने नियम के कई उद्धरणों के संदर्भ में पढ़ना चाहता हूँ।

यहाँ श्लोक 18 है। मुझे वापस जाना है और श्लोक 16 पढ़ना है ताकि यह प्रदर्शित हो सके कि क्या हो रहा है। परमेश्वर के मंदिर और मूर्तियों के बीच क्या समझौता है? क्योंकि हम जीवित परमेश्वर के मंदिर हैं।

अब, ध्यान दें कि वह क्या करता है, पद 18 में पौलुस क्या करता है। वह कहता है, और मैं तुम्हारा पिता बनूंगा, और तुम मेरे बेटे और बेटियाँ होगे। यशायाह के एक उद्धरण को जोड़ते हुए, सर्वशक्तिमान प्रभु यही कहता है।

यह 2 शमूएल 7 की आयत 14 से लिया गया उद्धरण है, जहाँ लेखक स्पष्ट रूप से दाऊद से किए गए वादे को लेता है और अब इसे मसीह पर नहीं बल्कि उसके लोगों पर लागू करता है। हम भी दाऊद के सच्चे पुत्र हैं। लेकिन फिर से, 2 कुरिन्थियों के पीछे की धारणा यह है कि यीशु मसीह ही दाऊद का सच्चा पुत्र है।

और फिर मसीह से संबंधित होने के कारण दाऊद के वादे हम में पूरे होते हैं। हालाँकि, यह एकमात्र स्थान नहीं है जहाँ ऐसा होता है। अगर मैं एक बार फिर से अभी तक नहीं की ओर जाऊँ, तो हम मुख्य रूप से इस बात पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं कि मसीह और उसके लोग अब वाचाओं को कैसे पूरा करते हैं।

हम फिर से अभी तक नहीं वाले पहलू पर नज़र डालेंगे, जो हमें प्रकाशितवाक्य में ले जाएगा। लेकिन अगर मैं अभी प्रकाशितवाक्य पर जा सकता हूँ, तो कोई व्यंग्य नहीं, श्लोक 7। मैं श्लोक 6 पढ़ूँगा। यह नई सृष्टि, नए आकाश, नई पृथ्वी के दर्शन के संदर्भ में है। और अब हम पुराने नियम

पर आधारित एक सूची खोजने जा रहे हैं, पुराने नियम के वादों की एक तरह की सूची जो अब परमेश्वर के लोगों में पूरी होती है।

पद 6, उसने मुझसे कहा, यह पूरा हो गया है। मैं अल्फा और ओमेगा हूँ, शुरुआत और अंत। प्यासे को, मैं जीवन के जल के झरनों से मुफ्त में पानी दूंगा, जो यशायाह 55.1 है। जो विजयी होंगे वे यह सब विरासत में पाएँगे, और मैं उनका परमेश्वर होऊँगा, और वे मेरे बेटे होंगे, या एनआईवी इसे बच्चों के रूप में अनुवादित करता है।

2 शमूएल अध्याय 7, दाऊदी वाचा सूत्र का एक और संकेत, या यहाँ तक कि उद्धरण। तो एक बार फिर, हम दाऊदी वाचा के पूर्ण होने का एक उदाहरण पाते हैं, न केवल मसीह में, बल्कि 2 शमूएल में उनके अनुयायियों में, मुझे खेद है, 2 कुरिन्थियों 6.18 में, और अब प्रकाशितवाक्य में प्रकाशितवाक्य 21 :7 में अभी तक साकार नहीं होने में। तो, परमेश्वर का इरादा सारी सृष्टि पर शासन करना है, और यहाँ हम फिर से दाऊदी वाचा और आदम और हव्वा के साथ परमेश्वर के रिश्ते और उनके लिए उसके इरादे के बीच एक संबंध देखते हैं।

परमेश्वर का इरादा कि आदम सारी सृष्टि पर शासन करेगा, और जो वाचा का पालन करके और उसका पालन करके ऐसा करेगा, अब दाऊद के माध्यम से, दाऊद के बड़े बेटे, जो यीशु मसीह है, के माध्यम से, लेकिन उसके अनुयायियों के माध्यम से भी पूरा किया जाता है। इसलिए शासन करने वाले दाऊद के राजा के रूप में, यीशु मसीह अब उद्धार की आशीषें, नई वाचा की आशीषें प्रदान करता है, और दाऊद की वाचा की पूर्ति लाता है, लेकिन उसके लोग भी दाऊद की वाचा को पूरा करते हैं, और वे भी परमेश्वर के पुत्र हैं, और वह उनका पिता है, क्योंकि वे मसीह यीशु से संबंधित हैं। वैसे, एक और फुटनोट या अलग से, यह संभवतः आरोपण की धारणा के लिए सबसे सम्मोहक तर्कों में से एक है।

इस बात पर बहस जारी है कि क्या नए नियम में हम कभी मसीह की आज्ञाकारिता पाते हैं, न कि केवल उसकी मृत्यु, उसकी आज्ञाकारिता और मृत्यु, बल्कि मसीह की आज्ञाकारिता का कार्य, उसका आज्ञाकारी जीवन, और क्या यह विश्वासियों को सौंपा जाता है। धर्मशास्त्रीय रूप से एक लंबे समय से चली आ रही परंपरा रही है जो कहती है कि औचित्य का एक हिस्सा मसीह का अपना धार्मिक जीवन है जो परमेश्वर के लोगों को सौंपा जाता है। इसे दाऊद की वाचा में कुछ औचित्य मिल सकता है, जिसमें यीशु मसीह वह है जो वह पूरा करता है जो आदम ने नहीं किया, जो दाऊद के पुत्र के रूप में वाचा को बनाए रखता है, वाचा का पालन करता है, और वाचा का पालन करने और वाचा को बनाए रखने के रूप में इस्राएल का प्रतिनिधित्व करता है।

अब यीशु मसीह, हमारे प्रतिनिधि के रूप में, उनकी आज्ञाकारिता हमारी हो जाती है। जो लोग मसीह से जुड़े हुए हैं और उनसे जुड़े हुए हैं, उनमें भी दाऊद की वाचा पूरी होती है। दाऊद की वाचा के प्रकाश में मसीह की अपनी आज्ञाकारिता को उसके अनुयायियों पर आरोपित या आरोपित होते हुए देखना संभव है, जहाँ दाऊद का राजा वह प्रतिनिधि था जो परमेश्वर के लोगों पर शासन करेगा, जो वाचा को बनाए रखेगा, जो उसका पालन करेगा।

अब, यीशु मसीह ऐसा करता है। वह पूरी तरह से आज्ञाकारिता का पालन करता है और आज्ञाकारिता में जवाब देता है, और फिर, मसीह से संबंधित होने के कारण, यह देखना संभव है कि उस आज्ञाकारिता को तब परमेश्वर के लोगों पर आरोपित किया जाता है, जो उसके हैं। इसलिए, दाऊद की वाचा यीशु मसीह के व्यक्तित्व में और, विस्तार से, उसके अनुयायियों में पूरी होती है।

मूसा की वाचा को यीशु मसीह में पूर्ण होते हुए भी देखा जाना चाहिए; अर्थात्, यीशु मसीह इसे पूर्ण करते हैं। इसका सबसे स्पष्ट कथन मैथ्यू के पर्वत पर उपदेश के विवरण की शुरुआत में मिलता है। बिलकुल शुरुआत में, मैथ्यू द्वारा उपदेश के सार में प्रवेश करने से पहले, और परिचय से मेरा मतलब परिचयात्मक बातों से नहीं है, आप मुख्य बिंदु तक पहुँचने के लिए रास्ते से हट जाते हैं, लेकिन उपदेश के बाकी हिस्से को सही ढंग से पढ़ने और समझने की तैयारी के रूप में।

ध्यान दें कि यीशु अध्याय 5, पद 17 से 20 में क्या कहते हैं: यह मत सोचो कि मैं व्यवस्था या भविष्यद्वक्ताओं को समाप्त करने आया हूँ। मैं उन्हें समाप्त करने नहीं, बल्कि उन्हें पूरा करने आया हूँ। और वह आगे कहता है कि मैं तुमसे सच कहता हूँ कि जब तक स्वर्ग और पृथ्वी लुप्त नहीं हो जाते, तब तक व्यवस्था से एक भी अक्षर या कलम का एक भी चिह्न गायब नहीं होगा।

यहाँ, मेरे NIV में कानून को बड़े अक्षरों में लिखा गया है, शायद सही भी है, क्योंकि यीशु मूसा के कानून के बारे में बात कर रहे हैं। जब तक सब कुछ पूरा नहीं हो जाता, तब तक कानून से एक भी बिंदु नहीं दिखाई देगा। अब, जब यीशु कहते हैं कि मैं कानून को पूरा करने आया हूँ, तो वह मूसा का कानून है, जो मूसा की वाचा का हिस्सा है जिसे परमेश्वर ने अपने लोगों के साथ बनाया था, उन शर्तों का हिस्सा है जिनका उन्हें पालन करना है।

जब यीशु कहते हैं कि मैं उसे खत्म करने नहीं बल्कि उसे पूरा करने आया हूँ, तो कम से कम इस संदर्भ में, मुझे नहीं लगता कि यीशु मुख्य रूप से यह कह रहे हैं कि मैं उसे बनाए रखने और उसका पालन करने आया हूँ। हाँ, उसने ऐसा किया, और सुसमाचारों में यीशु के ऐसा करने के स्पष्ट संदर्भ हैं। लेकिन यहाँ, मुख्य रूप से यह बात नहीं लगती कि यीशु मसीह व्यवस्था का पालन करने और उसे पूरी तरह से पालन करने के लिए आया है, हालाँकि हाँ, उसने ऐसा किया।

इसके बजाय, मुझे लगता है कि हमें अध्याय 5 में पूर्ति को उसी तरह समझना चाहिए जिस तरह मैथ्यू ने पहले दो अध्यायों में, खास तौर पर अध्याय 2 में पूर्ति का इस्तेमाल किया है। याद रखें, अगर आप अध्याय 2 में वापस जाते हैं, तो यीशु ने अपने बचपन में जो कुछ भी किया या उसके माता-पिता ने जो कुछ भी किया, मैथ्यू पुराने नियम के पाठ की पूर्ति से जोड़ता है। यह यशायाह नबी द्वारा कही गई बातों को पूरा करने के लिए हुआ, या यह यिर्मयाह द्वारा कही गई बातों को पूरा करने के लिए हुआ, या यह जो लिखा गया था उसे पूरा करने के लिए हुआ, आदि आदि।

इसलिए, मत्ती 2 में यीशु जो कुछ भी करता है, जहाँ भी जाता है, उसे पूरा करने के रूप में देखा जाता है, यानी, पूर्णता तक लाना, जो कि प्रत्याशित और इंगित किया जा रहा था उसका लक्ष्य होना। अब यीशु कह रहा है कि मैं व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं को खत्म करने नहीं बल्कि उन्हें पूरा करने आया हूँ। यीशु मूसा की वाचा के हिस्से के रूप में मूसा की व्यवस्था को कैसे पूरा

करता है? खैर, बस इतना ही कि यीशु का जीवन और शिक्षा वही है जिसकी ओर वास्तव में व्यवस्था को इंगित किया गया था।

इसलिए यीशु की अपनी शिक्षा और उसका जीवन और सेवकाई वास्तव में मूसा की व्यवस्था और मूसा की वाचा के लक्ष्य हैं। अब जब मसीह आ चुका है, तो उसकी शिक्षा और उसके जीवन और सेवकाई को अब इसकी पूर्ति के रूप में देखा जा सकता है। इसलिए मत्ती जो कह रहा है वह यह है कि यीशु मूसा की वाचा और मूसा की व्यवस्था को उसकी पूर्णता और पूर्णता तक ले जाता है।

बाद में नए नियम में, प्रेरित पौलुस मूसा की वाचा की अस्थायी प्रकृति का उल्लेख करता है। गलातियों के अध्याय 3 में एक बार फिर से, हमने देखा कि गलातियों के अध्याय 3 में पौलुस जो कर रहा है उसका एक हिस्सा यह प्रदर्शित करना है कि परमेश्वर के लोगों के लिए नई वाचा की प्राथमिक पूर्ति यीशु मसीह के माध्यम से होती है, न कि पुरानी वाचा के माध्यम से। यह वह नई वाचा है जिसका वादा यहजेकेल में किया गया है, और यिर्मयाह इसे पाता है, या मुझे खेद है, उत्पत्ति 12 और उसके बाद में वादा किया गया अब्राहमिक वाचा अंततः मूसा की वाचा में नहीं बल्कि यीशु मसीह के व्यक्तित्व में अपनी पूर्ति पाता है।

और इसलिए, गलातियों के अध्याय 3 में, पॉल ने तर्क दिया कि वास्तव में, मूसा की वाचा ने मसीहा के आगमन की तैयारी में एक अस्थायी भूमिका निभाई थी। अब, एक बार फिर, मैं इस खंड की विस्तृत व्याख्या में नहीं जाना चाहता, और हमारे पास सभी विवरणों को देखने का समय नहीं है, लेकिन बस यह पहचानना है कि पॉल, फिर से, पूरा उद्देश्य यह है कि वह मूसा की वाचा की अस्थायी प्रकृति के लिए तर्क दे रहा है। इसने लोगों को रखने और बनाए रखने, उन्हें तब तक सुरक्षित रखने की एक अस्थायी भूमिका निभाई जब तक कि वादा नहीं आया, अब्राहम की वाचा का सच्चा वादा नहीं आया, जो कि यीशु मसीह है।

अब जबकि वह आ चुका है, अब जबकि यीशु मसीह आ चुका है, मूसा की वाचा अब परमेश्वर के लोगों पर बाध्यकारी नहीं है। यह अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँच चुकी है। यह यीशु मसीह के व्यक्तित्व में अपनी पूर्णता पर पहुँच चुकी है।

तो, पौलुस का कहना है कि मूसा की वाचा ने अब्राहम की वाचा को अलग नहीं किया। इसने उसे ग्रहण नहीं किया। यह अब्राहम की वाचा की अंतिम और अंतिम शाश्वत पूर्ति नहीं है।

इसके बजाय, पॉल कहते हैं, नहीं, अगर आप पुराने नियम को पढ़ते हैं, तो ऐतिहासिक रूप से, इसने लोगों को रखने, उनकी रक्षा करने और उन्हें बनाए रखने, उन्हें यीशु मसीह के व्यक्तित्व में आने वाली पूर्णता के लिए तैयार करने की एक अस्थायी भूमिका निभाई। इसलिए, उदाहरण के लिए, मैं अभी श्लोक 15 से पढ़ना शुरू करूँगा, ताकि आपको इस बात का अंदाज़ा हो जाए कि पॉल क्या कर रहा है। वह कहते हैं, भाइयों और बहनों, मैं रोज़मर्रा की ज़िंदगी से एक उदाहरण लेता हूँ।

जिस तरह से कोई भी स्थापित की गई मानवीय वाचा को न तो अलग कर सकता है और न ही उसमें कुछ जोड़ सकता है, वैसा ही इस मामले में भी है। दूसरे शब्दों में, पौलुस कहता है, जिस तरह से अब्राहम की वाचा स्थापित की गई है, उसी तरह कोई दूसरी वाचा आकर उसे खत्म नहीं

कर सकती, उसे अलग नहीं कर सकती या उसमें कुछ नहीं जोड़ सकती। वादे अब्राहम और उसके वंश से किए गए थे।

शास्त्र में बीजों के बारे में नहीं कहा गया है, जिसका अर्थ है बहुत से, बल्कि एक बीज के बारे में कहा गया है, जिसका अर्थ है मसीह। हमने इसे पढ़ा है। फिर, श्लोक 17 में, वह कहता है, मेरा मतलब यह है: अब्राहमिक वाचा के 430 साल बाद पेश किया गया कानून इसे अलग नहीं करता है, वाचा, अब्राहमिक वाचा जो पहले परमेश्वर द्वारा स्थापित की गई थी, और इस प्रकार वादे को खत्म नहीं करता है।

क्योंकि यदि विरासत, अर्थात् अब्राहम की प्रतिज्ञाएँ और अब्राहम की वाचा, व्यवस्था पर निर्भर है, तो यह अब प्रतिज्ञा पर निर्भर नहीं है। परन्तु परमेश्वर ने अपने अनुग्रह में इसे अब्राहम को प्रतिज्ञा के द्वारा दिया। तो फिर व्यवस्था क्यों दी गई? इसे अपराधों के कारण जोड़ा गया था।

जब तक वह वंश जो मसीह है, अध्याय 3, पद 16 में, पौलुस ने हमें बताया कि अब्राहम का वंश मसीह है। जब तक वह वंश जिसके बारे में वादा किया गया है, नहीं आ जाता। व्यवस्था स्वर्गदूतों के माध्यम से दी गई थी और एक मध्यस्थ को सौंपी गई थी।

हालाँकि, मध्यस्थ का मतलब एक से ज़्यादा पक्ष होते हैं, लेकिन परमेश्वर एक है। तो क्या व्यवस्था परमेश्वर के वादों के खिलाफ़ है? बिलकुल नहीं। क्योंकि अगर ऐसी व्यवस्था दी गई होती जो जीवन दे सकती, तो व्यवस्था के ज़रिए धार्मिकता ज़रूर आती।

लेकिन पवित्रशास्त्र ने सब कुछ पाप के नियंत्रण में बंद कर दिया है ताकि यीशु मसीह में विश्वास के माध्यम से जो वादा किया गया था वह उन लोगों को दिया जा सके जो विश्वास करते हैं। फिर, बस कुछ और आयतें। इस विश्वास के आने से पहले, यह यीशु मसीह में विश्वास है, वह बीज जो अब्राहमिक वाचा को पूरा करता है।

इस विश्वास के आने से पहले, हम व्यवस्था के अधीन हिरासत में थे। आने वाले विश्वास के प्रकट होने तक हमें बंद रखा गया। इसलिए, मसीह के आने तक व्यवस्था हमारा संरक्षक थी ताकि हम विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरें।

अब जब यह विश्वास आ गया है, तो हम अब किसी संरक्षक के अधीन नहीं हैं। इसलिए, मसीह यीशु में, आप सभी विश्वास के माध्यम से परमेश्वर की संतान हैं। इसलिए, मैं यहीं रुकता हूँ।

लेकिन आपको यह तस्वीर मिलती है कि व्यवस्था लोगों को रखने, उनकी रक्षा करने, उन्हें बनाए रखने, मसीह के आने तक उनकी रक्षा करने के लिए एक अस्थायी उपाय के रूप में कार्य करती थी। और अब जब मसीह आ गया है, तो व्यवस्था ने अपना उद्देश्य पूरा कर लिया है, और यह अब परमेश्वर के लोगों पर बाध्यकारी, अधिकारपूर्ण तरीके से कार्य नहीं करती है। वास्तव में, पौलुस भी इस खंड में अध्याय 3 और पद 10 में तर्क देता है।

वह कहता है कि जो लोग व्यवस्था के कामों पर भरोसा करते हैं, वे शापित हैं, जैसा कि लिखा है। शापित है वह हर कोई जो व्यवस्था की पुस्तक में लिखी हर बात को नहीं करता। लेकिन फिर वह

पद 13 में आगे बढ़ता है और कहता है, लेकिन मसीह ने हमारे लिए शाप बनकर हमें व्यवस्था के शाप से छुड़ाया।

दूसरे शब्दों में, यीशु की मृत्यु उस अभिशाप को भी समाप्त करती है जो मूसा के नियम के अनुसार जीवन जीने में विफलता के कारण आया था। और इसलिए, पौलुस का तर्क है कि अब्राहम की वाचा मुख्य रूप से और सूक्ष्मता से और संपूर्ण रूप से पुरानी वाचा, मूसा की वाचा में पूरी नहीं होती है, बल्कि यह मसीह में पूरी होती है। इसके बजाय, मूसा की वाचा हाँ की भूमिका निभाती है, जो पूर्ति लाती है, लेकिन रक्षा और रखवाली करके, और जैसा कि पौलुस कहता है, बंद करके, परमेश्वर के लोगों को तब तक बनाए रखती है जब तक कि वादा किया गया बीज नहीं आ जाता, जो कि मसीह है।

निहितार्थ यह है कि अब जब मसीह में पूर्णता आ गई है, तो पाठकों को मूसा के कानून के अधीन होने की आवश्यकता नहीं है। हम इब्रानियों के अध्याय आठ में कुछ ऐसा ही पाते हैं, एक और खंड जिसे हमने मंदिर के संबंध में निपटाया है। लेकिन इब्रानियों के अध्याय आठ में, लेखक के तर्क के हिस्से के रूप में बार-बार यह कि यीशु मसीह पुरानी वाचा के तहत विभिन्न घटनाओं और व्यक्तियों और संस्थाओं से श्रेष्ठ है, उस तर्क के हिस्से के रूप में, लेखक अब प्रदर्शित करता है कि यीशु मसीह एक श्रेष्ठ को लाता है, एक श्रेष्ठ वाचा का उद्घाटन करता है।

फिर से, जिस तरह से यीशु श्रेष्ठ हैं, उसे समझना महत्वपूर्ण है क्योंकि लेखक यह तर्क नहीं देता कि यीशु श्रेष्ठ हैं क्योंकि पुरानी वाचा योजना ए थी, और वह विफल हो गई। यह स्वाभाविक रूप से दोषपूर्ण और कुछ बुरा और दुष्ट था जो बस काम नहीं करता था। और इसलिए अब भगवान उसे खत्म कर देते हैं और कुछ और करते हैं।

लेकिन इसके बजाय, लेखक के तर्क के केंद्र में इब्रानियों का अध्याय एक और श्लोक दो है, जो आपको पुस्तक के बाकी हिस्सों को पढ़ने के लिए तैयार करता है। अतीत में, परमेश्वर ने हमारे पूर्वजों और भविष्यवक्ताओं से कई बार विभिन्न तरीकों से बात की, लेकिन इन अंतिम दिनों में, पूर्ति के दिनों में, उसने अपने बेटे के माध्यम से या अपने बेटे के द्वारा हमसे बात की है। इसलिए, दूसरे शब्दों में, यीशु को एक चरमोत्कर्ष पर लाते हुए, एक पूर्णता पर लाते हुए, परमेश्वर बोलते हुए देखा जाता है; परमेश्वर ने मूसा के माध्यम से, पुराने नियम के कानून के माध्यम से भविष्यवक्ताओं से विभिन्न तरीकों से बात की।

लेकिन अब परमेश्वर, परमेश्वर का अपने लोगों से बात करने का चरमोत्कर्ष उसके पुत्र, यीशु मसीह के माध्यम से है। इसलिए, हमें एक बार फिर से पुराने नियम के साथ यीशु के रिश्ते को इब्रानियों की पुस्तक में वादे और पूर्ति के रूप में समझना चाहिए। इसलिए अब, अध्याय आठ से 10 में, लेखक एक लंबा खंड शुरू करता है जहाँ वह पुराने नियम पर यीशु की श्रेष्ठता के लिए तर्क देगा क्योंकि वह जो उद्धार अब लाता है वह पुराने नियम में किए गए वादे की अंतिम पूर्ति है।

वास्तव में, लेखक पुराने नियम से ही तर्क देगा कि यदि मूसा के अधीन पुरानी वाचा अभी भी बाध्यकारी थी, तो नए नियम में, यह केवल नए नियम की बात नहीं है, बल्कि पुराने नियम में आप यिर्मयाह को नई वाचा की आशा करते हुए क्यों पाते हैं? यदि ऐसा है, तो ऐसा लगता है कि पुरानी

वाचा अब अप्रचलित हो गई है। यदि पुरानी वाचा परमेश्वर का अंतिम वचन था, मानवता के साथ संबंध स्थापित करने और पाप से निपटने का उसका अंतिम साधन था, यदि पुरानी वाचा अपने लोगों के लिए परमेश्वर की इच्छा की अंतिम अभिव्यक्ति थी, तो आपको वर्षों बाद यिर्मयाह को नई वाचा की स्थापना की आशा करते हुए क्यों पाते हैं? इसलिए, इब्रानियों के अध्याय आठ में, और मैं पद सात और उसके बाद सात से 13 तक पढ़ूंगा, हम पाते हैं कि लेखक स्पष्ट रूप से यिर्मयाह 31, नई वाचा के अंश को विस्तार से उद्धृत करता है। अब, हमने नई वाचा का पाठ देखा है।

नई वाचा यहजेकेल 36 और 37 में भी स्पष्ट रूप से मौजूद है, और शायद योएल 2 और अन्य जगहों पर भी, लेकिन लेखक यिर्मयाह 31 से स्पष्ट रूप से उद्धरण देता है, जो स्पष्ट रूप से इस नए रिश्ते को एक नई वाचा के रूप में संदर्भित करता है। इसलिए, श्लोक सात, क्योंकि यदि पहली वाचा में कुछ भी गलत नहीं होता, तो दूसरी के लिए कोई जगह नहीं तलाशी जाती। फिर से, यदि पुरानी वाचा पाप से निपटने और मानव जाति के साथ संबंध स्थापित करने के लिए परमेश्वर के अंतिम वचन के लिए पर्याप्त थी, तो आपको बाद में एक नई वाचा का उल्लेख क्यों करना है? लेकिन परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों में दोष पाया, श्लोक आठ, और कहा, अब यिर्मयाह को उद्धृत करते हुए, यहोवा की यह वाणी है, ऐसे दिन आ रहे हैं जब मैं इस्राएल के लोगों और यहूदा के लोगों के साथ एक नई वाचा बाँधूँगा।

यह उस वाचा के समान नहीं होगा जो मैंने उनके पूर्वजों के साथ तब बाँधी थी जब मैंने उनका हाथ पकड़कर उन्हें मिस्र से बाहर निकाला था क्योंकि वे मेरी वाचा के प्रति वफादार नहीं रहे और मैं उनसे दूर हो गया, यहोवा की यह वाणी है। यह वही वाचा है जो मैं उस समय के बाद इस्राएल के लोगों के साथ स्थापित करूँगा, यहोवा की यह वाणी है। और यहाँ मैं अपनी व्यवस्था उनके मन में डालूँगा और उसे उनके हृदय पर लिखूँगा।

मैं उनका परमेश्वर होऊँगा, और वे मेरे लोग होंगे। फिर से वाचा का सूत्र है। वे अब अपने पड़ोसी को नहीं सिखाएँगे या एक दूसरे से नहीं कहेंगे, प्रभु को जानो, क्योंकि वे सभी मुझे छोटे से लेकर बड़े तक जानेंगे, क्योंकि मैं उनकी दुष्टता को क्षमा करूँगा और उनके पापों को फिर कभी याद नहीं रखूँगा।

फिर, इब्रानियों के लेखक ने पद 13 में यह कहते हुए समाप्त किया कि इस वाचा को नया कहकर, उसने पहली वाचा को अप्रचलित बना दिया है, और जो अप्रचलित और पुराना है वह जल्द ही गायब हो जाएगा। इसलिए इस पाठ में न केवल यिर्मयाह 31 के लंबे उद्धरण पर ध्यान दें, बल्कि एक बार फिर इस तथ्य पर भी ध्यान दें कि पुरानी वाचा, जो पुरानी वाचा करने के लिए थी, वह नई वाचा में अपनी अंतिम पूर्ति और अभिव्यक्ति पाएगी, जहाँ एक पूर्ण नवीनीकरण है, और हमारे दिलों में व्यवस्था का लेखन, एक नवीनीकरण है, और यहजेकेल 37 के अनुसार, परमेश्वर अपनी आत्मा को हम में डालेगा, जिससे हम वाचा को बनाए रखने में सक्षम होंगे, और पापों की क्षमा भी होगी। आप देखिए, इब्रानियों के लेखक के अनुसार, पुरानी वाचा की समस्या यह नहीं है कि पुरानी वाचा पापपूर्ण या बुरी या गलत थी या एक प्रकार की योजना थी जो काम नहीं आई और उल्टी पड़ गई, बल्कि एकमात्र समस्या इस्राएल की हठधर्मिता और विद्रोह और अवज्ञा थी, और पुरानी वाचा अंततः इस पर विजय नहीं पा सकी, जिसे अब नई वाचा लोगों को नया हृदय देकर निपटेगी।

तो एक बार फिर, पुरानी वाचा, जो नए नियम का सुसंगत विषय प्रतीत होता है, वह यह है कि पुरानी वाचा ने अपना कार्य पूरा कर लिया है; यह नई वाचा में अपनी पूर्णता तक पहुँच गई है जिसका उद्घाटन अब यीशु मसीह के व्यक्तित्व में किया गया है। और इसलिए मैं इस समय के बाकी हिस्सों में, और फिर अगले भाग में भी, अपना शेष समय नई वाचा और नए नियम में इसकी पूर्ति पर ध्यान देने में बिताना चाहता हूँ। जब नई वाचा की बात आती है, तो हम पहले ही सुझाव दे चुके हैं कि इसका मतलब एक व्यापक वाचा होना है जो दूसरों को भी पूर्णता प्रदान करती है।

यह वह वाचा है जो अन्य सभी वाचाओं को बनाए रखती है, या मुझे खेद है, अन्य सभी वाचाओं, अब्राहमिक, मूसाइक और दाऊदिक वाचा की परिणति, पूर्ति। नई वाचा अब उन सभी को चरमोत्कर्ष, एक परिणति पर ले आती है। हमने इस तथ्य पर भी गौर किया है, फिर से, बस आपको याद दिलाने के लिए ताकि जब हम विशिष्ट नए नियम के पाठों को देखें, तो हम संबंध को याद कर सकें।

दो प्राथमिक पाठ जिन्हें हम देखना चाहते हैं, वे हैं यिर्मयाह 31, यिर्मयाह अध्याय 31 के श्लोक 31 से 34, और फिर यहजकेल 36 और 37 के उपयुक्त खंड, जिनमें वाचा की भाषा भी शामिल है और स्पष्ट रूप से एक नई वाचा की आशा करते हैं जो परमेश्वर के लोगों के साथ स्थापित की जाएगी जब वह उन्हें उनकी भूमि पर लौटाएगा। इसलिए, वाचाएँ भूमि और पुनर्स्थापना से भी संबंधित हैं। जब नई वाचा की बात आती है, तो मुझे लगता है कि नई वाचा के आवश्यक तत्व ये हैं, और फिर से, मैं इन टिप्पणियों का श्रेय स्कॉट हैफमैन के सेंट्रल थीम्स इन न्यू बाइबिलिकल थियोलॉजी और कई अन्य कार्यों को देता हूँ।

सबसे पहले, नई वाचा की आवश्यकता है; यिर्मयाह और यहजकेल के अनुसार, नई वाचा की आवश्यकता मुख्य रूप से इस्राएल के पाप और इस्राएल के विद्रोह के कारण है। इसलिए, इसी कारण से उन्होंने पुरानी वाचा को तोड़ा, और इसलिए इस्राएल के विद्रोह के कारण नई वाचा की आवश्यकता है। नई वाचा का दूसरा आवश्यक तत्व यह है कि इसे पिछली वाचा की तरह नहीं तोड़ा जाएगा, ठीक इसलिए क्योंकि कानून परमेश्वर के लोगों के दिलों पर लिखा जाएगा, यिर्मयाह 31, और उन्हें एक नया दिल दिया जाएगा, वे एक नवीनीकृत दिल होंगे, उन्हें पवित्र आत्मा दिया जाएगा, यहजकेल अध्याय 36।

तीसरा, नया करार परमेश्वर के छुटकारे के पिछले कार्य पर आधारित है। चौथा, इसके संबंध में, यह पापों की पूर्ण क्षमा प्रदान करता है, जो कि विशेष रूप से यिर्मयाह के अंत में है, लेकिन यहजकेल में भी, परमेश्वर उन्हें उनकी दुष्टता और मूर्तिपूजा से शुद्ध करेगा, परमेश्वर उनके पापों को फिर कभी याद नहीं रखेगा, वह उनकी दुष्टता के लिए क्षमा प्रदान करेगा। इसलिए, नया करार पापों की पूर्ण क्षमा प्रदान करता है।

अंत में, नई वाचा एक मसीहा के आने की ओर इशारा करती है जिसकी मृत्यु और पुनरुत्थान वाचा को लागू करेगा। और हम इसे नए नियम के बाकी हिस्सों में, नई वाचा के विकास में देखेंगे।

अब, एक सवाल जो उठता है, वह यह है कि पुराने नियम में, यिर्मयाह और यहजेकेल दोनों में नई वाचा, नई वाचा को पुनर्स्थापित इस्राएल से वादा किया गया है।

विशेष रूप से यिर्मयाह 31 में, हम पाते हैं कि विभाजित राज्य, उत्तरी और दक्षिणी राज्य, इस्राएल और यहूदा, यहजेकेल में उनके साथ वाचा बनाई गई है, दो राज्य बहाल किए गए हैं और यह इस्राएल राष्ट्र के साथ है, परमेश्वर के लोगों इस्राएल के साथ है, कि परमेश्वर, मैं इस्राएल शब्द का उपयोग परमेश्वर के पुराने वाचा के लोगों, पुराने नियम में परमेश्वर के लोगों के लिए एक व्यापक शब्द के रूप में कर रहा हूँ, यह इस्राएल, इस्राएल के बहाल राष्ट्र के साथ है, कि परमेश्वर यिर्मयाह और यहजेकेल में एक नई वाचा का अपना वादा करता है। तो, यह स्पष्ट रूप से परमेश्वर के लोगों से संबंधित है। अब, जब आप नए नियम में जाते हैं, तो ऐसा प्रतीत होता है कि नई वाचा इस्राएल में नहीं बल्कि परमेश्वर के नए लोगों, यहूदियों और अन्यजातियों में पूरी होती है, जो चर्च बनाते हैं।

सवाल यह है कि हम इसे कैसे समझते हैं। एक धार्मिक प्रणाली या आंदोलन जिसने इस पर संघर्ष किया है, वह है डिस्पेंसेशनलिज्म। इस तनाव से कैसे जूझा गया है, यह दर्शाने के लिए कुछ अलग-अलग डिस्पेंसेशनल थीम हैं; जहाँ पुराने नियम में यिर्मयाह और यहजेकेल में वादे हैं, वहीं नए नियम का वादा इज़राइल के लिए विशेष रूप से बनाया गया है।

फिर भी नए नियम में, आपको लगता है कि नई वाचा और उसके वादे और आशीषें अब विभिन्न चर्चों पर लागू हो रही हैं, जिन्हें आप नए नियम के लेखकों को संबोधित करते हुए पाते हैं, यानी, यहूदियों और अन्यजातियों से बने परमेश्वर के लोग। डिस्पेंसेशनलिज्म के भीतर, जिसे अक्सर शास्त्रीय डिस्पेंसेशनलिज्म के रूप में जाना जाता है, उस आंदोलन की विशेषताओं में से एक इज़राइल और चर्च के बीच बहुत, बहुत स्पष्ट अंतर करना था। इसलिए, पुराने नियम में परमेश्वर ने राष्ट्रीय, जातीय इज़राइल से जो वादे किए हैं, उन्हें उनके द्वारा पूरा किया जाना चाहिए।

विश्वास करने वाले यहूदियों और अन्यजातियों से बने चर्च को समान नहीं माना जाना चाहिए, या भ्रमित नहीं होना चाहिए, या, अधिक क्लासिक पुराने डिस्पेंसेशनलिज्म के तहत कई लोगों के अनुसार, पुराने नियम के इज़राइल के साथ इसका कोई संबंध नहीं था। इसलिए अक्सर, जिस तरह से इसे समझाया गया था, वह यह है कि नए वाचा के कुछ आध्यात्मिक आशीर्वाद, जैसे कि पापों की क्षमा और एक नया दिल, चर्च में महसूस किए जाते हैं। उन्हें चर्च को दिया जाता है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि नया वाचा चर्च से जुड़ा हुआ है।

नई वाचा केवल इस्राएल के साथ ही पूरी हो सकती है, लेकिन चर्च को कुछ आशीर्वाद मिलते हैं, ठीक वैसे ही जैसे इस्राएल को नई वाचा के तहत मिलते हैं। जिसे अक्सर अधिक प्रगतिशील डिस्पेंसेशनलिज्म के रूप में जाना जाता है, वह वास्तव में कहता है कि नई वाचा चर्च में पूरी होती है। यह वास्तव में पूरी हुई है।

ऐसा नहीं है कि कुछ आशीर्वाद चर्च में भी फैल जाते हैं, बल्कि वे वास्तव में चर्च में पूरे होते हैं, भले ही वे भविष्य में किसी समय इस्राएल के लिए एक भविष्य की पूर्ति को सुरक्षित रखेंगे। इसलिए, डिस्पेंसेशनलिज्म के कुछ अधिक प्रगतिशील आंदोलनों में पहले से ही लेकिन अभी तक पूर्ति नहीं देखी गई है। पहले से ही, नई वाचा पूरी हो रही है।

यह परमेश्वर के लोगों, यहूदियों और अन्यजातियों से बने चर्च में मसीह के माध्यम से पूरा हो रहा है, लेकिन यह परमेश्वर के लोगों, इस्राएल के लिए भविष्य की युगांतिक पूर्ति को खारिज नहीं करता है। हालाँकि, मुझे लगता है कि कुंजी यह समझना है कि आप कहाँ गिरना चाहते हैं। कुंजी यह समझना है कि नया नियम लगातार प्रदर्शित करता है कि नया वाचा यीशु मसीह के व्यक्तित्व में और फिर एक बार फिर, विस्तार से, उन सभी में पूरी होती है जो उससे संबंधित हैं।

तो अब, वर्तमान में, यहूदी और गैर-यहूदी, परमेश्वर के लोगों के रूप में, यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान द्वारा अधिनियमित नई वाचा की पूर्ति और नई वाचा की आशीषों में भाग लेते हैं। लेकिन नई सृष्टि में भी इसकी पूर्णता होगी, जिसे हम पहले ही देख चुके हैं, लेकिन हम इसे प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 और पद 3 में फिर से देखेंगे। तो एक बार फिर, नई वाचा पहले से ही लेकिन अभी तक पूरी नहीं हुई है। यह पहले से ही मसीह और उसके लोगों में है, लेकिन इसे प्रकाशितवाक्य 21 की नई सृष्टि में पूर्णता के रूप में पूरा होना बाकी है।

अब, संक्षेप में या एक सारांश कथन बनाने के लिए जो ध्यान में रखना महत्वपूर्ण है क्योंकि हम नए नियम के पाठ को देखना शुरू करते हैं और नए नियम की पूर्ति यह है कि यह महत्वपूर्ण है, मुझे लगता है कि यह महसूस करना महत्वपूर्ण है कि उद्धार के सभी आशीर्वाद जो हम आज ईसाईयों के रूप में आनंद लेते हैं, वे वर्तमान और भविष्य में नए नियम से अविभाज्य रूप से बंधे हैं। इसलिए जब हम नए नियम को पढ़ना शुरू करते हैं, और हम अपने उद्धार, बचाए जाने, छुड़ाए जाने, पवित्र आत्मा प्राप्त करने, मेरे पापों को क्षमा किए जाने, अब मेरे पास यीशु मसीह के साथ एक व्यक्तिगत संबंध है, जैसी चीजों के बारे में बात करना शुरू करते हैं, ये सभी भाषाएँ जो हम ईसाईयों के रूप में उपयोग करना पसंद करते हैं। महत्वपूर्ण बात यह है कि हम इसे नए नियम में शामिल करें।

इसे कहने का दूसरा तरीका यह है कि कोई उद्धार नहीं है, और उद्धार की कोई आशीष नहीं है सिवाय उस नई वाचा के जिसे परमेश्वर ने अपने लोगों के साथ वादा किया और स्थापित किया है। इसलिए, उद्धार की सभी आशीषें जिनका आप और मैं अभी आनंद लेते हैं और भविष्य में आनंद लेंगे, वे उस नई वाचा से अटूट रूप से जुड़ी हुई हैं जिसे परमेश्वर ने यीशु मसीह के व्यक्तित्व के माध्यम से स्थापित और पूरा किया है। इसलिए, उदाहरण के लिए, हम बाद में इस पर और अधिक विचार करेंगे, लेकिन जब हम पवित्र आत्मा के बारे में बात करते हैं, और हम आत्मा के उपहारों और आत्मा को प्राप्त करने और आत्मा से भरे जाने के बारे में बात करते हैं, तो पवित्र आत्मा एक चर्च सिद्धांत नहीं है।

यह ऐसी चीज़ नहीं है जिसका आविष्कार पौलुस ने किया हो या जिस पर ज़ोर देने का फ़ैसला किया हो। यह ऐसी चीज़ नहीं है जिस पर नए नियम के लेखकों ने ज़ोर देना शुरू किया हो। पवित्र आत्मा, चाहे वह नए नियम में कहीं भी क्यों न हो, अंततः नए नियम में अपनी उपस्थिति का श्रेय नई वाचा के वादों को जाता है।

फिर से, योएल अध्याय 2 या यहेजकेल अध्याय 36 पर वापस जाएँ, जहाँ उन ग्रंथों में पवित्र आत्मा के उंडेले जाने का वादा उस नई वाचा के रिश्ते से जुड़ा है जिसे परमेश्वर अपने लोगों के साथ

स्थापित करना चाहता है। इसलिए, उद्धार के सभी आशीर्वाद जिनका हम आनंद लेते हैं, पवित्र आत्मा, छुटकारा, पापों की क्षमा, ये सभी नई वाचा से जुड़े हुए हैं। हम नई वाचा में भाग लेने के अलावा, परमेश्वर द्वारा अपनी नई वाचा को पूरा करने और अपने लोगों के साथ एक नई वाचा का रिश्ता स्थापित करने के अलावा उनका आनंद नहीं ले सकते।

इसलिए, जब हम नए नियम की पूर्ति के बारे में सोचते हैं, तो नए नियम के साथ शुरुआती बिंदु सुसमाचार है, यह ध्यान देने के लिए कि सुसमाचार और यीशु मसीह क्या कहते हैं, नए नियम के संबंध में क्या है। शुरुआत करने का स्थान संभवतः मत्ती अध्याय 26 या लूका अध्याय 22 पद 20 होगा। लेकिन हम मत्ती अध्याय 26 और पद 28 को देखेंगे।

यह प्रभु के भोज के संदर्भ में है, जहाँ यीशु अपने शिष्यों के साथ फसह का उत्सव मना रहे हैं, और फिर यह यीशु और उनके शिष्यों के बीच प्रभु के भोज के उत्सव में बदल जाता है, जो तब फसह में जो इरादा था उसकी पूर्ति प्रतीत होता है। इसलिए, यह केवल कोई अच्छा भोजन नहीं है जिसे यीशु चाहते हैं कि वे खाएं ताकि वे इस्राएल की तरह बन सकें, बल्कि ऐसा लगता है कि इसका वादे और पूर्ति के संदर्भ में इससे कुछ संबंध है। इसलिए, जिस तरह से फसह के भोज में मिस्र से अपने लोगों के उद्धार का जश्न मनाया गया था, उसी तरह अब प्रभु का भोज परमेश्वर के नए वाचा उद्धार, अपने लोगों के अपने बेटे, यीशु मसीह के माध्यम से उद्धार का स्मरण और उत्सव मनाएगा।

इसलिए, मत्ती अध्याय 26 और श्लोक 17 से 30 में, हम यीशु द्वारा फसह का उत्सव मनाने और फिर अपने शिष्यों के साथ प्रभु के भोज, भोज, यूचरिस्ट, जो भी आप इसे कहना चाहें, का उद्घाटन करने का विवरण पाते हैं। और उसके बीच में, हम लूका 22 में भी यही बात पाते हैं। लेकिन उसके बीच में, मत्ती 26 और श्लोक 28 में, मत्ती कहता है, यह वाचा का मेरा लहू है, या मत्ती ने यीशु को यह कहते हुए पाया है, यह वाचा का मेरा लहू है, जो पापों की क्षमा के लिए बहुतों के लिए बहाया जाता है।

अब वाचा की भाषा और पापों की क्षमा की भाषा पर ध्यान दें, जो यिर्मयाह अध्याय 31 से सीधे आती है, शायद यह जकेल से भी। लेकिन अगर यह आपको आश्चर्य करने के लिए पर्याप्त नहीं है, तो देखें कि लूका ने इसे अध्याय 22, लूका अध्याय 22 और श्लोक 20, लूका अध्याय 22 और 20 में अंतिम भोज के लूका के रिकॉर्ड में कैसे दर्ज किया है। वह कहता है, उसी तरह, रात के खाने के बाद, यीशु ने फसह के भोजन से प्याला लिया और कहा, यह प्याला मेरे खून में नई वाचा है, जो बहुतों के लिए बहाया जाता है। इसलिए, इन दोनों को एक साथ रखकर, यीशु ने अनुमान लगाया कि क्रूस पर उसकी मृत्यु नई वाचा की पुष्टि होगी।

क्रूस पर यीशु की मृत्यु के माध्यम से ही वाचा लागू होगी और नई वाचा के तहत वादा किए गए पापों की क्षमा लागू होगी और पूरी होगी। सुसमाचारों के कुछ अन्य अंश जो स्पष्ट रूप से नई वाचा का उल्लेख नहीं करते हैं, लेकिन मेरी राय में, नई वाचा के पाठ की ओर संकेत करते हैं। उनमें से एक, मुझे लगता है, यीशु द्वारा पवित्र आत्मा का वितरण होगा।

उदाहरण के लिए, यूहन्ना अध्याय 7, और आयत 37 से 39 में। यूहन्ना 7 37 से 39 में यह कहा गया है: पर्व के आखिरी और सबसे बड़े दिन, यीशु खड़ा हुआ और ऊँची आवाज़ में कहा, जो कोई प्यासा हो, मेरे पास आए और पीए। जो कोई मुझ पर विश्वास करता है, जैसा कि शास्त्र में कहा गया है, उसके भीतर से जीवन के जल की नदियाँ बह निकलेंगी।

इसके द्वारा, उनका मतलब उस आत्मा से था जिसे उन लोगों को प्राप्त करना था जो उस पर विश्वास करते थे, जब तक कि आत्मा अभी तक नहीं दी गई थी क्योंकि यीशु को अभी तक महिमा नहीं दी गई थी। इसलिए, अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के बाद, यीशु नई वाचा के वादे को पूरा करने के लिए आत्मा को वितरित करेंगे, विशेष रूप से यहजेकेल 36 या योएल अध्याय 2 में, कि परमेश्वर अपने लोगों पर अपनी आत्मा को उंडेलेगा। या उसी पुस्तक में, यूहन्ना अध्याय 3 में, यीशु और नीकुदेमुस के बीच प्रसिद्ध बातचीत।

भाषा, पद 3 से शुरू होती है, यीशु कहते हैं, सच में, सच में, मैं तुमसे कहता हूँ, या बहुत सच में, मेरी किंग जेम्स पृष्ठभूमि काम कर रही थी, बहुत सच में, मैं तुमसे कहता हूँ, कोई भी व्यक्ति परमेश्वर के राज्य को तब तक नहीं देख सकता जब तक कि वे फिर से जन्म न लें या उन्हें नया जन्म न दिया जाए। फिर निकोडेमस पूछता है कि जब कोई बूढ़ा हो जाता है तो वह कैसे जन्म ले सकता है। निकोडेमस ने पूछा। निश्चित रूप से वे जन्म लेने के लिए अपनी माँ के गर्भ में दूसरी बार प्रवेश नहीं कर सकते। यीशु ने उत्तर दिया, सच में, मैं तुमसे कहता हूँ, कोई भी व्यक्ति परमेश्वर के राज्य में तब तक प्रवेश नहीं कर सकता जब तक कि वे पानी और आत्मा से पैदा न हों।

मेरे विचार से, दूसरों ने इस पर तर्क दिया है, और इसलिए यह मेरे लिए मौलिक नहीं है, लेकिन मेरे विचार से, यह यहजेकेल 36 और नई वाचा के वादों पर वापस जाता है जिन्हें हमने वहाँ देखा था। इसलिए, उदाहरण के लिए, अगर मैं यहजेकेल अध्याय 36 की आयत ढूँढ़ सकता हूँ, और यहाँ यह है, आयत 24 से शुरू करते हुए, क्योंकि मैं तुम्हें राष्ट्रों से निकालूँगा, मैं तुम्हें सभी देशों से इकट्ठा करूँगा, मैं तुम्हें तुम्हारी अपनी भूमि पर वापस लाऊँगा, मैं तुम पर स्वच्छ जल छिड़कूँगा, यह वही जल होगा जब यीशु कहते हैं, तुम्हें पानी से जन्म लेना चाहिए, मैं तुम पर स्वच्छ जल छिड़कूँगा, और तुम स्वच्छ हो जाओगे, मैं तुम्हें तुम्हारी सभी अशुद्धियों से शुद्ध करूँगा। फिर आयत 26, मैं तुम्हें एक नया हृदय दूँगा और तुम में एक नई आत्मा डालूँगा।

पद 27, और मैं अपनी आत्मा तुम में डालूँगा और तुम्हें मेरी विधियों पर चलने के लिए प्रेरित करूँगा। इसलिए, जब यीशु नीकुदेमुस से वादा करता है, या नीकुदेमुस से कहता है, तो मुझे कहना चाहिए, जब वह नीकुदेमुस से कहता है, जब तक तुम पानी और आत्मा से पैदा नहीं होते, तब तक तुम परमेश्वर के राज्य को नहीं देख सकते, यह सीधे तौर पर यहजेकेल 36 की नई वाचा की भाषा की ओर इशारा करता है। दूसरे शब्दों में, फिर से, यीशु मसीह नई वाचा का उद्घाटन कर रहे हैं।

मेरी राय में, जब भी यीशु ने मत्ती में पापों की क्षमा का वादा किया, तो उसे यीशु कहा जाना चाहिए क्योंकि वह अपने लोगों को उनके पापों के लिए क्षमा करेगा, या वह अपने लोगों के पापों को क्षमा करेगा। जब भी यीशु पापों की क्षमा की पेशकश करता है, तो यह स्पष्ट रूप से नई वाचा, विशेष

रूप से यिर्मयाह 31, लेकिन यहजेकेल की ओर भी इशारा करता है, कि परमेश्वर उन्हें अशुद्धता से शुद्ध करेगा, परमेश्वर क्षमा लाएगा, परमेश्वर उनके पापों को फिर कभी याद नहीं रखेगा। वास्तव में, मैं बाद में तर्क दूंगा कि जब पौलुस पापों की क्षमा का उल्लेख करता है, तो हमें शायद इसे नई वाचा से सीधे जुड़ाव के रूप में भी देखना चाहिए।

कूस पर यीशु की मृत्यु, कूस पर यीशु की मृत्यु के विशिष्ट संदर्भ, उनका रक्त, नई वाचा की पुष्टि के रूप में, क्षमा लाने के रूप में, प्रभु के भोज के शब्दों में नई वाचा का उद्घाटन करने के रूप में, यूहन्ना 7 और अन्य स्थानों में यीशु द्वारा पवित्र आत्मा का वितरण, जल और आत्मा द्वारा नया जन्म, जो यहजेकेल 36 से जुड़ा है, पापों की क्षमा जो यीशु प्रदान करता है, ये सभी नई वाचा से जुड़े हुए हैं। एक और उदाहरण यह तथ्य होगा कि यीशु एक नए लोगों को बनाने के लिए आया था। यह तथ्य कि सुसमाचारों में, यीशु अपने 12 शिष्यों और प्रेरितों के साथ शुरू करते हुए एक नए लोगों को इकट्ठा करने के लिए आता है, लेकिन एक बार फिर, मुझे लगता है, एक नए लोगों को इकट्ठा करना शुरू करता है जो विश्वास में उसका जवाब देंगे, नई वाचा को मानता है।

यीशु अपने लोगों के साथ परमेश्वर की नई वाचा की प्रतिज्ञाओं की पूर्ति में एक नई वाचा बना रहे हैं, जिसे वह यहजेकेल और यिर्मयाह में उनकी भूमि पर पुनः स्थापित करने जा रहे हैं। इसलिए, निष्कर्ष के तौर पर, कूस पर यीशु की मृत्यु नई वाचा को लागू करने और उसकी पुष्टि करने का साधन है। यह पुरानी वाचा के तहत पाए जाने वाले पापों की वादा की गई क्षमा को लाने का साधन है।

नई वाचा संभवतः पुराने नियम में पुरानी वाचा तक भी पहुँचती है, क्योंकि नई वाचा संभवतः पुराने नियम के तहत पापों को वापस ले जाती है और उन्हें गले लगाती है, जिन्हें पुराने नियम के बलिदान प्रणाली के तहत प्रतीकात्मक रूप से निपटाया गया था। अब, उन पापों को अंततः और अंततः नई वाचा के उद्धार के तहत निपटाया जाता है जिसे यीशु मसीह अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के माध्यम से प्रदान करता है। इसलिए, सुसमाचार स्पष्ट रूप से, हमेशा नई वाचा शब्द का उपयोग किए बिना, हालाँकि यह लूका 22.20 में करता है, सुसमाचार स्पष्ट रूप से यीशु को यिर्मयाह और यहजेकेल की नई वाचा का उद्घाटन करने और पुराने नियम में अन्य जगहों पर अपने लोगों के साथ वाचा संबंध में प्रवेश करने के परमेश्वर के इरादे की पूर्ति के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

अब, हम अपने अगले भाग में जो करेंगे वह है पॉलिन साहित्य और अन्य जगहों पर नए नियम के कई अन्य पाठों को देखना जो इसी तरह मसीह और उसके लोगों में पूर्णता को प्रदर्शित करते हैं, पुराने नियम में यिर्मयाह और यहजेकेल में वादा किए गए नए वाचा की पूर्ति। फिर, हम अभी तक नहीं हुए पहलू, प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 के नए निर्माण में नए वाचा की पूर्णता को देखकर समाप्त करेंगे।

यह डॉ. डेव मैथ्यूसन द्वारा नए नियम के धर्मशास्त्र पर उनके व्याख्यान श्रृंखला में दिया गया है। यह सत्र 10 है, वाचा, पुराना नियम और नया नियम, भाग 2।